सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 182

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
फरवरी – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

यह दो साल हम सभी गुरुबंधु भगिनियों के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह साल वं. दादाजी का जन्म शताब्दी वर्ष है। 2021 में हमारे प्रिय दादाजी का सौंवा जन्म दिन है और 2022 में उनके 101 वें जन्म दिवस पर, तारीख, अनुसार यानी 06.02.2022 पर प.पू. हाजी बाबा का उर्स यानी उनके पहले सूफी गुरु का उर्स है।

ऐसे महान गुरुओं का लाभ हमें हुआ है, यह हमारा महासौभाग्य है। उन्होंने हमें जो ज्ञान प्रदान किया है उससे इस जनम में हमें क्या प्राप्ति करनी है, अपनी उन्नति किस प्रकार करनी है या वह किस प्रकार होगी इसका अभ्यास करना एवं उसके लिए प्रयत्न करना हमारा कर्त्तव्य है।

पहले हम इस प्राप्त हुए जन्म का परिचय कर लेते हैं। जन्म प्राप्त करने वाला हर एक जीव उत्क्रांत अवस्था प्राप्त करने के लिए इहलोक में आता है। उस जीव की अवस्थाऐं इस प्रकार है।

<u>जीव–जीवात्मा–आत्मा–परमात्मा,</u> परमात्मा यानी ईश्वर का

स्वरुप या प्रतिरुप प्रतिबिंब, उस अवस्था तक हम सभी को एक ना एक दिन जाना है। लेकिन आज हम कौन सी अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे है और आगे की अवस्था में कैसे जायेंगे?

प्रथमतः हम इन अवस्थाओं का विचार करते है।

जीव – यानी जो जी रहा है लेकिन उसे और किसी चीज़ का ज्ञान या समझ नहीं हैं। वो हम अनेक कीड़े, कीटक या कुछ जानवर ऐसे देखते है जो सिर्फ जीवित रहने के लिए जीते है। उनको और किसी चीज की पहचान, समझ नहीं होती। किसी से कोई लेना–देना नहीं होता। इस अवस्था में निसर्गतः उनकी उन्नति होकर एक–एक इंद्रिय अवयव (योनी) develop यानी विकसित हो गई तो वह जीव जीवात्मा अवस्था प्राप्त करता है।

जीवात्मा – मानवीय जन्म जीवात्मा अवस्था का जन्म है। इस अवस्था में जीते समय अन्य चीजों की पहचान या समझ जीवात्मा को होती है। लेकिन वह किस लिए जी रहा है, जीवन में क्या प्राप्त करना है, क्यों जी रहा है, इसके बारे में संभ्रम रहता है। ऐसे जीवन में अनेक विशय होते है और जीवन दिशा–हीन होकर व्यर्थ निकल जाता है। जीवात्मा जीवन – मृत्यु के सायकाल में अटक जाता है।

आत्मा यह जीवात्मा की उत्क्रांत अवस्था है। श्री गुरु कृपाशीर्वाद से जीवात्मा अवस्था का स्थित्यंतर होकर आत्मा यह अवस्था गुरु ने हमें प्रदान की है।

आत्मा अवस्था में जीवन का ज्ञान होकर, जीने का अर्थ प्राप्त होता है और जीवन का सार्थक हो, इस प्रयत्न में जीवन व्यतीत होता है।

इस गुरुमार्ग में वं. दादाजी ने हमें पाँच दीक्षाऐं देकर आत्मा अवस्था तक पहुँचाया और फिर महाकारण दिशा प्राप्त करा दी। इसका मतलब यह है कि जैसे मुंबई से पूना तक एक्सप्रेस हाईवे बनाया है, लेकिन उस पर से हमें खुद गुजरना है तो ही हम पूना पहुँचेंगे। सिर्फ हाईवे बनाया यह सुनकर वहाँ नहीं पहुँच सकते। उसी तरह दी गई दीक्षाओं का लाभ लेने के लिए हमें खुद प्रयत्न करना है।

हमारे जीवन में आज अनगिनत विषय है। पिछले जन्मों के विषय जिनका पूर्णत्व

नहीं हुआ और इस जन्म में हम अपने कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रियों से अनेक विषय धारण करते रहते है। ऐसे अनेक विषयों के जीवन में अनेक आकार है। उनमें से कौन से आकार को साकार करना है, इसकी पहचान आज हमें नहीं है। इस अवस्था में मन का अभाव है और इसलिए असमाधान है।

हम यह समझते है कि विषयों की धारणा हमारी बुद्धि में होती है। लेकिन ऐसा नहीं है। आज हमारे देह का जो कवच है, उसमें सात घर है। इन सात परतों (layers) में असंख्य पेशी है हार्मोन्स है। हमारे आस–पास आने वाले विषय इन सात परतों (layers) में धारण होते है। जिस जिस समय कोई विषय की जरुरत पड़ती है तब वह विषय बुद्धि के तरफ प्रवाहित होते है। जब वे त्वचा की पेशियों में होते है तब उनका अस्तित्व कंपन के स्वरुप में रहता है। बुद्धि में प्रवाहित होने पर वह कंपन विषयरुप हो जाते है। जिस प्रकार रेडियो में waves आकर वह ध्वनित होते है, उसी प्रकार यह कार्य अपनी देह में चलता है।

इन सात परतों में पहली चार परतें (layer) देहिक होती हैं और अंदर की तीन परतें आत्मिक होती हैं। आस पास के जगत के वातावरण में जो विषय हैं और हमारे ऋणानुबंध में, कर्म में जो विषय है उनकी धारणा पहले देहिक परतों में होकर फिर आत्मिक परतों (layers) तक होती है।

जीवात्मा अवस्था में इस प्रकार अनगिनत विषय होते है, जिसमें से एक गुरु या ईश्वर भी होता है लेकिन उपासना करने के बाद उस उपासना के अनेक भाग अनेक विषयों को साफ (clean) करने के लिए काम में आते हैं।

जब आत्मा अवस्था विकसित होने लगती है, तब जीवन में कोई एक निश्चित विषय आकार लेने लगता है। तब अन्य भी विषय जीवन में रहेंगे लेकिन कोई एक प्रधान विषय आकार लेकर साकार होने लगता है। दस विषय हैं तो दस विषय आकार लेकर साकार नहीं हो सकते तो एक–एक विषय द्वितीय होकर कोई एक विषय साकार होता है, जिससे हमें और ओरों को भी समाधान प्राप्त करा देता है।

यह आत्मा अवस्था हमें प्राप्त हो इसलिए वं. दादाजी ने हमारे कर्मों के ऋणानुबंधों के विषयों का विमोचन कर पहली चार दीक्षाऐं त्वचा के चार परतों में दी है। यानी उपासना दीक्षा, नामःस्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा और गुरुदीक्षा अपनी चार देहिक परतों पर धारण

कर पाँचवीं दीक्षा से देहिक परतों का एकरुपत्व आत्मिक परतों से किया है और वह एकरुपत्व कर जब आत्मा अवस्था प्राप्त होगी यानी जीवन का प्रधान विषय 'गुरु' या 'गुरु शक्ति' या 'जीवन का सार्थक' होगा तब महाकारण अवस्था धारण होने लगेगी। जीवात्मा अवस्था में हम केवल 10% विचार अपने जीवन के प्रति और बाकी 90% विचार लोगों के प्रति यानी किसने क्या कहा, किस प्रकार बर्ताव किया, आदि, करते है। आत्मा अवस्था में यह प्रपोर्शन उल्टा यानी 90–10 हो जाता है। तब ॐकार साधना प्यारी लगने लगती है। मुलाकात साधना एवं आरती साधना के लिए कार्यकेंद्र पर जाना निश्चित हो जाता है। गुरुशक्ति की लहरों से और ॐकार साधना के न्यास, हमारी त्वचा के स्तर शुद्ध करते रहते है।

इतना शास्त्रोक्त गुरु मार्ग शायद ही कोई और होगा। इसमें हमें अपना विकास नैसर्गिक गति से प्राप्त कर लेना है और फिर जब हमें साधक अवस्था प्राप्त होगी तब गुरुशक्ति धारण के साथ वह प्रवाहित होने की भी शुरुआत होगी। तभी असली मतलब में गुरुकार्य हम कर सकेंगे। अभी तक गुरुमार्ग में श्री गुरु ही हमारी सेवा कर रहे है। जब हमारे माध्यम से गुरुशक्ति प्रवाहित होकर दुखी लोगों की सेवा होगी तभी हम गुरु की सेवा करेंगे। वं. दादा, प.पू. बाबा एवं अन्य दिव्य पूण्य विभूतियों के आशीर्वाद से यह अवस्था हम सभी को जल्दी से जल्दी प्राप्त हो, यही उनके चरणों में प्रार्थना।

।। शुभं भवतु ।।

सेवक,

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible